NCERT SOLUTIONS

CLASS - 10th

aglasem.com

Class : 10th
Subject : हिंदी
Chapter : 2
Chapter Name : राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

Q1 परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

Answer. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए तर्क देते हुए कहा कि आप किसलिए इतना क्रोध कर रहे हैं। श्री राम को तो यह धनुष नए समान धनुष के जैसा लगा। श्रीराम ने इसे तोडा नहीं बस उनके छूते ही धनुष खुद टूट गया ऐसे कई धनुष हमने बचपन में तोडें है। इस धनुष तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा।

Page : 14 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q2 परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

Answer. राम जी के स्वभाव की विशेषताएं:-परशुराम के क्रोध करने पर श्रीराम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने नम्रता पूर्ण वाक्यों का सहारा लेकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। उनकी भाषा अत्यंत कोमल व मीठी थी। राम विनम्र, धैर्यवान, मृदुभाषी व बुद्धिमान व्यक्ति थे।

लक्ष्मण जी के स्वभाव की विशेषताएं:-लक्ष्मण क्रोधी स्वभाव के थे।
उनमें निडरता कूट-कूट कर भरी थी। लक्ष्मण निडर, साहसी, क्रोधी तथा अन्याय विरोधी स्वभाव के थे।

Page : 14 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q3 लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

Answer. लक्ष्मण- हे मुनि! बचपन में हमने खेल खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े हैं तब तो आप कभी क्रोधित नहीं हुए थे। फिर इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हैं?
परशुराम- अरे, राजपुत्र! तू काल के वश में आकर ऐसा बोल रहा है। यह शिवजी का धनुष है।

Page : 15 , Block Name :- प्रश्न अभ्यास

Q4 परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्नपद्यांश के आधार पर लिखिए -
बाल ब्रहमचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही||
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्हदीन्ही||
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा||

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर||

Answer. लक्ष्मण के परशुराम को व्यंग्य कसने पर परशुराम ने कहा- कि वे बाल ब्रह्मचारी है और क्रोधी स्वभाव के हैं। वे समस्त संसार में क्षत्रिय कुल के शत्रु के रूप में प्रसिद्ध है। वे अभिमान से बताते हैं कि उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर ब्राह्मणों को दान दिया है और उनके इस फरसे ने सहस्त्रबाहु के बाहों को काट डाला है। अतः राजकुमार! मेरे इस फरसे को अच्छे से देख लो, इसकी भयानकता गर्भ में पल रहे शिशु को भी नष्ट कर देती है।
उनका फरसा बहुत ही भयानक है।

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q5 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई?

Answer. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है:-
*वीर पुरुष अपनी महानता का गुणगान खुद नहीं करते।
*युद्धभूमि में शूरवीर युद्ध करते हैं।
*स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते।
*वीर पुरुष किसी के खिलाफ गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते।
*वह अन्याय के विरुद्ध हमेशा खड़े रहते हैं।

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q6 साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

Answer. यह कथन बिल्कुल सही है। और यही दोनों गुण एक व्यक्ति को वीर बनाते हैं। परंतु यदि विनम्रता इन गुणों के साथ आकर मिल जाए तो वह व्यक्ति को श्रेष्ठतम वीर की श्रेणी में ला देती है। विनम्रता व्यक्ति में सदाचार व मधुरता भर देती है जिससे व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सोच समझकर कोई कदम उठाता है।

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q7 भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभटमानी||
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकिपहारू||
(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरिजाहीं||
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहितअभिमाना||
(ग) गाधिसू नु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ||

Answer. (क) प्रस्तुत पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस से ली गई है। इन पंक्तियों में लक्ष्मण द्वारा परशुराम के बोले हुए अपशब्दों का जवाब दिया गया है।
भाव यह है कि लक्ष्मण जी मुस्कुराते हुए मधुर वाणी में परशुराम पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि हे मुनि आप अपने अभिमान के वश में है। आप मुझे बार-बार अपना फरसा दिखा कर डरा रहा है। आप को देखकर तो ऐसा लगता है मानो फूंक से पहाड़ उड़ाने का प्रयास कर रहे हो।
(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण परशुराम द्वारा बार-बार कुठार उठाने पर उत्तर देते हुए कहते हैं कि- हम कोई कुंम्हडबतिया नहीं है जो किसी भी तर्जनी को दिखाकर मुरझा जाएं। मैंने आपके कुठार और धनुष बाण को देख लिया है इसलिए यह सब आपसे अभिमान सहित कह रहा हूं। हमें नादान बालक समझने का प्रयास ना करें।

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q8 पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

Answer. *रामचरितमानस तुलसी जी द्वारा अवधि में लिखी गई है।
*तुलसीदास जीने इसमें दोहा, छंद, चौपाई का सुंदर प्रयोग किया है।
*भाषा में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग सुंदर है।
*भाषा में अलंकार की अधिकता मिलती है।
*वीर रस का प्रयोग।
*प्रभावशाली भाषा।
*सुंदर व संगीतात्मक भाषा।
*नाटकीयता का समावेश।
*दो चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम अत्यंत सुंदर बन गया है।

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q9 इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

Answer. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य विद्यमान है। लक्ष्मण और परशुराम का पूरा संवाद व्यंग्य प्रधानशैली में है। परशुराम द्वारा शिव धनुष को तोड़ने वाला शत्रु कहे जाने पर लक्ष्मण जी मुस्कुराते हुए परशुराम पर व्यंग्य कसते हैं। लक्ष्मण परशुराम से धनुष तोड़ने का व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि हमने अपने बाल काल में ऐसे अनेक धनुष तोड़े हैं तब तो हम पर कभी क्रोध नहीं किया गया। विश्वामित्र भी परशुराम की बुद्धि पर मन ही मन व्यंग्य कसते हैं और मन में कहते हैं कि परशुराम जी राम लक्ष्मण को साधारण बालक समझ रहे हैं। उन्हें तो चारों ओर हरा ही हरा सूझ रहा है जो लोहे की तलवार को गन्ने की खांड से तुलना कर रहे हैं। अर्थात यह श्री राम लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं किंतु यह लौहमयी अर्थात फौलाद की बनी हुई खड्ग है ऊख की खांड नहीं है जो मुंह में लेते ही गल जाए। खेद है मुनि अब भी नासमझ बने इनके प्रभाव को नहीं समझ रहे हैं।

aglasem.com

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q10 निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए -
(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही।
(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।
(ग) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।
बार बार मोहि लागि बोलावा||
(घ) लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु||

Answer. (क) अनुप्रास अलंकार
(ख) उपमा एवं अनुप्रास अलंकार
(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार
(घ) उपमा अलंकार

Page : 15 , Block name : प्रश्न अभ्यास

Q11 " सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध ना हो तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुंचाएं जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर- निवृत्ति का उपाय ही ना कर सके।"
आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव लिए नहीं होता बल्कि कभी-कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।

Answer. उपर्युक्त कथन बिल्कुल तर्कसंगत है। कभी-कभी क्रोधपूर्ण व्यवहार की भी आवश्यकता पड़ती है क्योंकि सही स्थान पर किया गया क्रोध सकारात्मक परिणाम देता है। किसी के बुरे व्यवहार पर किया गया क्रोध पूर्णत: उचित है। क्रोध हमेशा नकारात्मक प्रभाव नहीं रखता।

Page : 15 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

Q12 संकलित अंश में राम का व्यवहार विनयपूर्ण और संयत है, लक्ष्मण लगातार व्यंग्य बाणों का उपयोग करते हैं और परशुराम का व्यवहार क्रोध से भरा हुआ है। आप अपने आप को इस परिस्थिति में रखकर लिखी कि आपका व्यवहार कैसा होता।

Answer. श्रीराम का स्वभाव अत्यंत सरल एवं मृदुभाषी है। लक्ष्मण का व्यवहार व्यंग्य पूर्ण है। परशुराम क्रोधी स्वभाव के हैं। अगर हम उस परिस्थिति में होते तो श्रीराम जैसा विनम्र, शांत एवं सरल स्वभाव रखने का प्रयत्न करते क्योंकि परशुराम के बढ़े हुए गुस्से को बढ़ाना अनुचित होता।

Page : 16 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

Q13 अपने किसी परिचित या मित्र की स्वभाव की विशेषताएं लिखिए।

Answer. छात्र स्वयं करें।

Page : 16 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

Q14 दूसरों की क्षमताओं को कम नहीं समझना चाहिए- इस विषय को ध्यान में रखते हुए एक कहानी लिखिए।

Answer. छात्र स्वयं करें।

Page : 16 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

Q15 उन घटनाओं को याद करके लिखिए जब आपने अन्याय का प्रतिकार किया हो।

Answer. छात्र स्वयं करें।

Page : 16 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

Q16 अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

Answer. अवध के कुछ इलाके जैसे- गोरखपुर, गोंडा, बलिया, अयोध्या आदि में अवधी बोली जाती है।

Page : 16 , Block name : रचना और अभिव्यक्ति

aglasem.com